देवीपाटन मण्डल में भूमि उपयोग का भू–कालिक प्रतिरुप

धर्मेन्द्र कुमार सिंह
(शोध छात्र)
भूगोल विभाग
दी० द० उ० गो० विश्वविद्यालय
गोरखपुर
ईमेलः singhdk2065@gmail.com

सारांश

अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है यहाँ के अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। देवीपाटन मण्डल में औसत वन क्षेत्रफल राज्य के औसत वन क्षेत्र से अधिक है। कृषि बेकार भूमि लगभग कम है कुल परती भूमि 3–4 प्रतिशत के बीच है। कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि लगभग 11–13 प्रतिशत के बीच है एवं शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 67–69 प्रतिशत के बीच है इन सभी संवर्गों में विगत 15 वर्षों में क्षेत्रफल में कहीं कमी तो कहीं वृद्धि दर्ज हुई है जिसका विशलेशण वर्ष 2004 और 2018 के आंकड़ों के आधार पर किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि के आधुनिक तकनीकियों का प्रयोग कर के कृषि उत्पादन को बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए तथा नकदी फसल क्षेत्र में वृद्धि करने से कृषकों के आय में वृद्धि किया जा सकता है।

मूल बिन्दु

अर्थव्यवस्था, क्षेत्रफल, कृषि बेकार भूमि, शुद्ध बोया गया क्षेत्र, नकदी फसल।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 08.09.2021
Approved: 24.09.2021

धर्मेन्द्र कुमार सिंह

देवीपाटन मण्डल में भूमि उपयोग का भू–कालिक प्रतिरुप

RJPP 2021,
Vol. XIX, No. II,

pp.307-316
Article No. 40

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2021-vol-xix-no-1

प्रस्तावना

प्राकृतिक संसाधनों में भूमि अति महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक संसाधन है। मानव के प्रत्येक क्रिया–कलाप एवं उसकी मूलभूत एवं प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति प्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से भूमि से ही होती हैं। मनुष्य की अन्य बहुत सी उच्च आवश्यकताएँ भूमि से ही पूरी होती है। मानव, प्राकृतिक एवं मानवयी परिवेश से सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है। यही कारण है, कि किसी स्थान विशेष के भूमि उपयोग की अवस्थाएँ उस क्षेत्र विशेश की तत्कालिक सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था की द्योतक होती है।

'भूमि प्रयोग' शब्द से धरातल के स्वाभाविक लक्षण का बोध होता है। जिस भू–भाग का उपयोग, प्राकृतिक रूप से हो रहा हो तो उस भू–भाग के लिए 'भूमि प्रयोग' शब्द का प्रयोग करना श्रेयस्कर होता है। किसी क्षेत्र की सम्पूर्ण भूमि का विभिन्न कार्यों के लिए किया जाने वाला उपयोग 'भूमि उपयोग' कहलाता है। अर्थात् जब भूमि का उपयोग मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विविध प्रकार से करता है, तब भूमि के उस प्रयोग के लिए 'भूमि उपयोग' शब्द का व्यवहार किया जाता है। भूमि उपयोग में भू–भगा का अपना प्राकृतिक स्वरूप नष्ट हो जाता है और मानवीय क्रियाओं का हस्तक्षेप बढ़ जाता है। अतः भूमि उपयोग का व्यावहारिक उपयोग किसी निश्चित उद्देश्य या योजना के लिए किया जाता है। भूमि उपयोग प्रतिरूप, भूमि संसाधन उपयोग, भूमि समस्या एवं योजना सम्बन्धी विवेचना का मुख्य केन्द्र माना जाता है। भूमि उपयोग का उचित दंग से उपयोग किया जाये तो यह कृषक के आय में वृद्धि एवं उच्च जीवन स्तर को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। उपरोक्त उद्देश्य को लेकर अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग का भूकालिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग का भूकालिक अध्ययन प्रस्तुत करना एवं भूमि उपयोग में हो रहे परिवर्तन का विश्लेषण करना है एवं इस परिवर्तन के विभिन्न कारण एवं परिणाम को जानकर भूमि उपयोग हेतु सुझाव प्रस्तुत करना जिससे अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर भूमि उपयोग नियोजन का प्रारूप प्रस्तुत किया जा सके।

आंकडों का स्रोत एवं विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रतिरूप को ज्ञात करने के लिए मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में देवीपाटन मण्डलक्षेत्र में भूमि उपयोग से सम्बिन्धित वर्ष 2004 और 2018 के आंकड़ों का संकलन जिला सांख्यिकीय पत्रिका के आधार पर किया गया है तथा इन आंकड़ों को एकत्रित करके विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक विधितंत्र का प्रयोग करते हुए भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है और विश्लेषण में सहायक उपयुक्त तालिका, ग्राफ तथा मानचित्रों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में कुल प्रतिवेदित क्षेत्र को 6 संवर्गो में रखकर विवेचना की गयी है।

अध्ययन क्षेत्र

सरयूपार मैदान का देवीपाटन मण्डल जिसमें गोण्डा, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच जिले सम्मिलित हैं। इसका क्षेत्रफल 14230 वर्ग किमी है जिसमें चार जनपदों की 16 तहसीलें, 44 विकासखण्ड, 457 न्यायपंचायतें तथा 2958 गाँव सम्मिलित हैं। यह मण्डल गंगा मैदान में नेपाल राष्ट्र की सीमा के सटे स्थित है। एक समतल मैदानी भाग है जो जलीय निक्षेपों के जमाव से निर्मित हुआ

है। यह क्षेत्र घाघरा, सरयू एवं राप्ती नदी के अवसादों से निर्मित क्षेत्र है, जिसमें बलुई दोमट, दोमट, चिकनी मिट्टी, बलुई मिट्टी, भाठ मिट्टी तथा नवीन जलोढ की अधिकता है। इस क्षेत्र में प्राकृतिक वनस्पतियों विशेषकर पतझड़ वाले वन तथा फलदार वृक्षयुक्त बाग–बगीचों की अधिकता है।

देवीपाटन कृषि प्रधान सघन जनसंख्या वाला क्षेत्र है। इस क्षेत्र की कुल जनसंख्या 10161207 (2011) है। जो राज्य के कुल जनसंख्या का 5.09 प्रतिशत है। यहाँ जनसंख्या का घनत्व 752 व्यक्ति/वर्ग कि0मी0 है तथा इस क्षेत्र में जनसंख्या की वृद्धि दर भी अपेक्षाकृत अधिक है। 1991–2001 में जनसंख्या वृद्धि दर 22.4 प्रतिशत तथा 2001 और 2011 में 26.93 प्रतिशत रही है। इस क्षेत्र के कुछ भागों में जनसंख्या का घनत्व 1000 व्यक्ति/वर्ग कि0मी0 से भी अधिक है। अध्ययन क्षेत्र में स्त्रियों की संख्या 907/1000 पुरुष है। यहाँ 0–14 वर्श आयु के लोगों की संख्या लगभग 70. 9 प्रतिशत है। जब की कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है। यह क्षेत्र आज भी शिक्षा के दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ है। यहाँ 2011 की जनगणना को अनुसार 53.28 प्रतिशत जनसंख्या ही साक्षर है। इसी प्रकार क्षेत्र की 34.19 प्रतिशत जनसंख्या ही कार्यशील है।

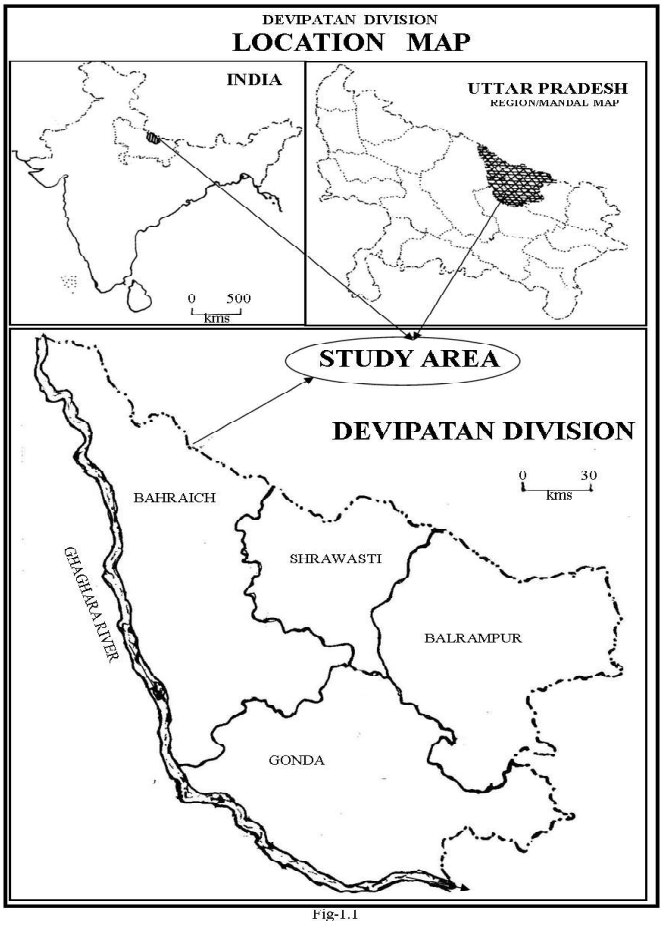

Fig-1.1

तालिका संख्या–01 देवीपाटन मण्डल में भूमि उपयोग प्रतिरुप क्षेत्रफल हेक्टेयर में 2004–2018

क्र. सं.	भूमि उपयोग वर्गीकरण	2004–05 क्षेत्र० (हेक्ट) में	2018–19 क्षेत्र० (हेक्ट) में	परिवर्तन हेक्ट में 2004–2018
1	वन भूमि	174860	173976	–884
2	कुल परती (वर्तमान परती एवं अन्य परती)	49552	60238	10686
3	उसर एवं कृषि बंजर भूमि	158390	174940	16550
4	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	25655	20177	–5478
5	चरागाह उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियां	26856	20775	–5181
6	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	971081	954288	–16793
7	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	1405494	1404394	

स्रोत–जिला सांख्किीय पत्रिका द्वारा संकलित

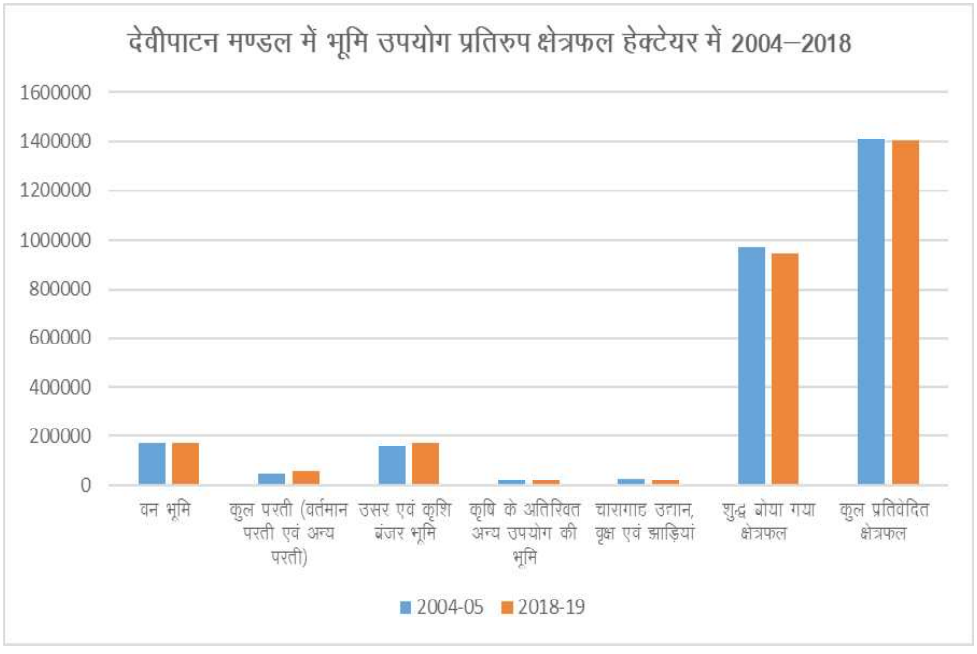

तालिका संख्या–02 देवीपाटन मण्डल में भूमि उपयोग प्रतिरुप क्षेत्रफल प्रतिशत में 2004–2018

क्र. सं.	भूमि उपयोग वर्गीकरण	2004–05 क्षेत्र० (प्रतिशत) में	2018–19 क्षेत्र० (प्रतिशत) में	परिवर्तन प्रतिशत में 2004–2018
1	वन भूमि	12.43	12.38	–0.05
2	कुल परती (वर्तमान परती एवं अन्य परती)	3.51	4.29	0.78
3	उसर एवं कृषि बंजर भूमि	1.82	1.44	1.2
4	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	11.26	12.46	–0.39
5	चरागाह उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियां	1.85	1.48	–0.37
6	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	69.12	67.95	–1.17
7	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	100	100	

स्रोत–जिला सांख्किीय पत्रिका द्वारा परिगणित

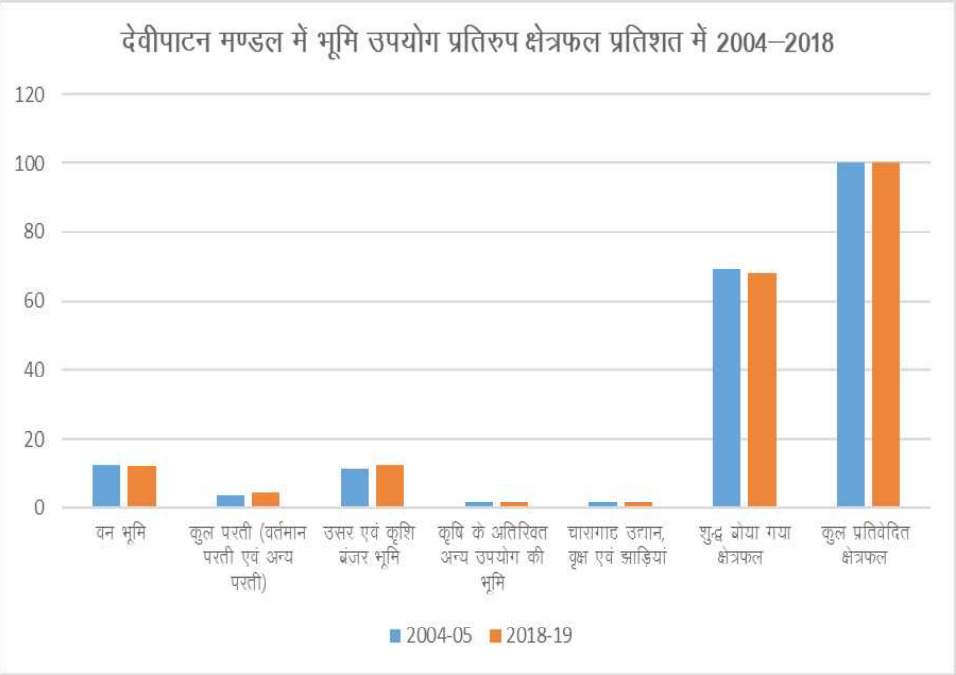

विश्लेषण

तालिका संख्या–03

देवीपाटन मण्डल में वन भूमि प्रतिशत 2004–05 क्षेत्र० (प्रतिशत) में			**देवीपाटन मण्डल में वन भूमि प्रतिशत में 2018**		
वर्गीकरण	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**	**वर्गीकरण**	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**
अधिकतम	45.98	मिहिनपुरवा	अधिकतम	46.03	मिहिनपुरवा
न्यूनतम	0.00	महासी	न्यूनतम	0.00	गिलौला
क्षेत्र औसत	12.43	देवीपाटन मण्डल	क्षेत्र औसत	12.38	देवीपाटन मण्डल

स्रोत–शोध छात्र द्वारा परिगणित

देवीपाटन मण्डल में वन क्षेत्र

तालिका संख्या 3 तथा चित्र संख्या 02 और 03 से स्पश्ट है अध्धयन क्षेत्र में वर्ष 2004–2018 के मध्य तुलना करने पर यह ज्ञात हुआ कि वर्श 2004 में वन का क्षेत्रफल **12.43** प्रतिशत था वही 2019 में बढ़कर वन का क्षेत्रफल **12.38** प्रतिशत हो गया। विगत 15 वर्शों में **.0.05** प्रतिशत वन क्षेत्र में कमी हुई है।देवीपाटन मण्डल में वन क्षेत्र में कमी पारिस्थितिकी दृष्टि से प्रतिकूल है। जहां अध्यनक्षेत्र में वर्ष 2004 में सर्वाधिक प्रतिशत वाला वन क्षेत्र मिहिनपुरवा विकासखण्ड **45.98** प्रतिशत एवं न्यूनतम वन क्षेत्रम्हासी विकासखण्ड में **0.00** प्रतिशत था, वहीं वर्श 2019 में सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वालाविकासखण्ड मिहिनपुरवा **46.03** प्रतिशत एवं न्यूनतम वन क्षेत्रवाला विकासखण्ड गिलौला **0.00** प्रतिशत हो गया है।

तालिका संख्या–04

देवीपाटन मण्डल में कुल परती भूमि प्रतिशत में 2004			**देवीपाटन मण्डल में कुल परती भूमि प्रतिशत में 2018**		
वर्गीकरण	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**	**वर्गीकरण**	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**
अधिकतम	13.38	प्रसपुर	अधिकतम	12.33	पंडरी कृपाल
न्यूनतम	0.95	ब्लरामपुर	न्यूनतम	0.58	हर्रैयासतघरवा
क्षेत्र औसत	3.51	देवीपाटन मण्डल	क्षेत्र औसत	4.29	देवीपाटन मण्डल

स्रोत–शोध छात्र द्वारा परिगणित

देवीपाटन मण्डल मेंकुल परती भूमि

तालिका संख्या 04 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2004 में सर्वाधिक परती भूमि

क्षेत्रफल वाला विकासखण्डपरसपुर 13.38 प्रतिशत तथा न्यूनतम क्षेत्रफल 0.95 प्रतिशत बलरामपुर विकासखण्ड का है, परन्तु 2018 में इस क्षेत्र में परिवर्तन होकर सर्वाधिक क्षेत्रफल 12.33 प्रतिशतपंडरी कृपाल विकासखण्ड व न्यूनतम क्षेत्रफल 0.58 प्रतिशत हरैंयासतघरवा विकासखण्ड में हो गया है। विगत 15 वर्षों मेंदेवीपाटन मण्डल क्षेत्र के कुल परती भूमि के औसत क्षेत्रफल में केवल 0.78 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

तालिका संख्या–05

देवीपाटन मण्डल में ऊसर एवं कृषि बंजर भूमि प्रतिशत में 2004			देवीपाटन मण्डल में ऊसर एवं कृषि बंजर भूमि भूमि प्रतिशत में 2018		
वर्गीकरण	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**	**वर्गीकरण**	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**
अधिकतम	5.27	महासी	अधिकतम	3.54	हुजूरपुर
न्यूनतम	0.49	मिहिनपुरवा	न्यूनतम	0.13	हरिहरपुर रानी
क्षेत्र औसत	1.83	देतीपाटन मण्डल	क्षेत्र औसत	1.44	देवीपाटन मण्डल

स्रोत–शोध छात्र द्वारा परिगणित

देवीपाटन मण्डल में ऊसर एवं कृषि बंजर भूमि

तालिका संख्या–05 से स्पष्ट है कि वर्ष 2004 में कुल क्षेत्रफल का 1.83 प्रतिशत ऊसर एवं कृषि बंजर भूमि था जो 2018 में घटकर 1.44 हो गया। 2004–2019 के बीच विगत 15 वर्षों में देवीपाटन मण्डल के ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि के क्षेत्रफल में 0.39 प्रतिशत की कमी आयी है। वर्ष 2004 में सर्वाधिक क्षेत्रफल महासी विकासखण्ड 5.27 प्रतिशत तथा न्यूनतम क्षेत्रफल मिहिनपुरवा विकासखण्ड का 0.49 प्रतिशत था। वहीं 2018 में यह घटकर सर्वाधिक क्षेत्रफल 3.54 प्रतिशत हुजूरपुर विकासखण्ड का हो गया है तथा न्यूनतम क्षेत्रफल वाला विकासखण्ड हरिहरपुर रानी 0.13 प्रतिशत है। उसर भूमि कम होने का प्रमुख कारण आधुनिक कृषि प्रणाली है जिसके अन्तर्गत सिंचाई सुविधा एवं जैविक खाद का प्रयोग इत्यादि।

तालिका संख्या–06

देवीपाटन मण्डल में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि प्रतिशत में 2004			देवीपाटन मण्डल में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि प्रतिशत में 2018		
वर्गीकरण	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**	**वर्गीकरण**	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**
अधिकतम	27.74	पंडरी कृपाल	अधिकतम	28.85	पंडरी कृपाल
न्यूनतम	0.87	श्रीदत्तगंज	न्यूनतम	3.63	गैड़ास बुर्जुग
क्षेत्र औसत	11.26	देतीपाटन मण्डल	क्षेत्र औसत	12.46	देवीपाटन मण्डल

स्रोत–शोध छात्र द्वारा परिगणित

देवीपाटन मण्डल में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि

अध्धयन क्षेत्र में वर्ष 2004 में अधिकतम क्षेत्रफल पंडरी कृपाल विकासखण्ड का 27.74 प्रतिशत है तथा न्यूनतम क्षेत्रफल वाला विकासखण्ड श्रीदत्तगंज 0.87 प्रतिशत था। वर्ष 2018 में भी पंडरी कृपाल 28.85 प्रतिशत सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला विकासखण्ड है एवं न्यूनतम क्षेत्रफल 3.63 प्रतिशत गैड़ास बुर्जुग विकासखण्ड का है। देवीपाटन मण्डल का औसत क्षेत्रफल वर्ष 2004 में 11.26 प्रतिशत था, जो 2018 में 12.46 प्रतिशत हो गया अतः विगत 15 वर्षों में यहां 1.2 प्रतिशत क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है, इस वृद्धि का कारण विभिन्न राष्ट्रीय राजमार्ग का विकास, नवीन नहर खुदाई, प्रशासनिक भवन निमार्ण इत्यादि है।

तालिका संख्या–07

देवीपाटन मण्डल में चारागाह उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियां प्रतिशत में 2004			देवीपाटन मण्डल में चारागाह उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियां प्रतिशत में 2018		
वर्गीकरण	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**	**वर्गीकरण**	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**
अधिकतम	8.77	तरबगंज	अधिकतम	5.25	तरबगंज
न्यूनतम	0.34	मिहिनपुरवा	न्यूनतम	0.05	जमुनहा
क्षेत्र औसत	1.85	देवीपाटन मण्डल	क्षेत्र औसत	1.48	देवीपाटन मण्डल

स्रोत–शोध छात्र द्वारा परिगणित

देवीपाटन मण्डल में चारागाह उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियां

वर्ष 2004–2018 के बीच अध्ययन क्षेत्र के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियों का औसत क्षेत्रफल वर्ष 2004 में 1.85 प्रतिशत था, जो 2018 में घटकर 1.48 प्रतिशत हो गया। विगत 15 वर्षों में 0.37 प्रतिशत की कमी आयी है। वनोन्मूलन के कारण इस क्षेत्र मे कमी आयी है। 2004में तरबगंज 8.77 प्रतिशत सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला विकासखण्ड थातथामिहिनपुरवा 0. 34 प्रतिशत न्यूनतम क्षेत्रफलवाला विकासखण्ड था, जबकी 2018 में भी सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला विकासखण्ड तरबगंज 5.25 प्रतिशत तथा न्यूनतम क्षेत्रफल वाला विकासखण्ड जमुनहा 0.05 प्रतिशत है।

तालिका संख्या–8

देवीपाटन मण्डल में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल प्रतिशत में 2004			देवीपाटन मण्डल में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल प्रतिशत में 2018		
वर्गीकरण	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**	**वर्गीकरण**	**प्रतिशत**	**विकासखण्ड का नाम**
अधिकतम	90.05	फखारपुर	अधिकतम	87.70	गैड़ास बुजुर्ग
न्यूनतम	41.31	मिहिनपुरवा	न्यूनतम	41.55	मिहिनपुरवा
क्षेत्र औसत	69.12	देवीपाटन मण्डल	क्षेत्र औसत	67.95	देवीपाटन मण्डल

स्रोत–शोध छात्र द्वारा परिगणित

देवीपाटन मण्डल में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल

तालिका संख्या 08 तथा चित्र संख्या 02 और 03 से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2004 में सर्वाधिक क्षेत्रफल फखारपुर विकासखण्ड 90.05 प्रतिशत जबकि न्यूनतम क्षेत्रफल 41.31 प्रतिशत मिहिनपुरवा विकासखण्ड का है। वर्श 2018 में सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला विकासखण्ड गैड़ास बुजुर्ग 87.70 प्रतिशत तथा न्यूनतम क्षेत्रफल वाला विकासखण्ड मिहिनपुरवा 41.55 प्रतिशत है। देवीपाटन मण्डल के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का बहुत बड़ा हिस्सा शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल है, जिसमें विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है। देवीपाटन मण्डल में औसत शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल वर्ष 2004 में 69.12 प्रतिशत था, जो 2018 में घटकर 67.95 प्रतिशत हो गया, विगत 15 वर्षों में 1.17 प्रतिशत शुद्ध बोया गये क्षेत्रफल में कमी आयी है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

भूमि उपयोग भूकालिक अध्ययन प्रतिरूप का वर्ष 2004–2018 के बीच तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विगत 15 वर्षों में अनेक विकासखण्डों में वृद्धि और ह्रास हुआ है उस जगह स्थिरता बनी हुई है। यह स्थिति अध्ययन क्षेत्र के पिछड़े अर्थव्यवस्था वाले क्षेत्र के उपयुक्त नहीं है। अध्ययन से स्पष्ट होता हैं कि इस क्षेत्र में जनसंख्या का भार तीव्र गति से बढ़ रहा है जिससे आने वाले भविष्य में खाद्यान्न संकट की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। देवीपाटन मण्डल में वन क्षेत्र मे ह्रास परिस्थितिकी दृष्टि से प्रतिकूल है परन्तु कुल परती भूमि में वृद्धि कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में वृद्धि तथा शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल में कमी, खाद्यान्न की उत्पादन की उपलबधता के दृष्टि से द्यातक सिद्ध हो सकता है। इन विभिन्न समस्याओं से निपटने के लिये भूमि का नियोजन किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इन समस्याओं के समाधान हेतु विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किये गये है।

1. वृक्षों के कटाई पर नियंत्रण किया जाये, नियोजित ढ़ग से वृक्षारोपण किया जाये।
2. कृषि योग्य भूमि में शस्य गहनता के साथ–साथ नकदी फसल पर ध्यान दिया जाये।
3. कृषि बेकार भूमि, परती भूमि, ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि में कृषि के अतिरिक्त कार्य को किया जाये जिससे शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल में कमी न होने पाये।
4. सड़क निर्माण, भवन निर्माण, सरकारी, गैर सरकारी, प्रशासनिक भवन, कृषि बेकार भूमि का ही उपयोग किया जाये।
5. भावी पीढ़ी हेतु भूमि उपयोग का समन्वित प्रारूप सुनिश्चित किया जाये।

सन्दर्भ

1. Stamp, L.D." (1960): Applied Geography, Penguin, London, PP41-44. And
2. Stamp, L.D." (1962): The Land Use of Britain: Its Use and Misuse, Penguin, London, P.426
3. पाण्डेय, राजेन्द्र,(1982): "बासगांव तहसील में भूमि उपयोग," अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, भूगोल विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, ।
4. इन्दुशेखर उपाध्याय,(1990): "अकबरपुर तहसील का समाकलित क्षेत्र विकास : एक लघु स्तरीय नियोजन" अप्रकाशित पी–एच0डी0 शोध प्रबन्ध, अवध विश्वविद्यालय,फैजाबाद,
5. सिंह, सुभाश चन्द्र,(1991): गोरखपुर जनपद में सिंचाई विकास तथा उसका भूमि उपयोग, अप्रकाशित विश्वविद्यालय फैजाबाद

6. मिश्र, ओम प्रकाश,(1992) : सुल्तानपुर जनपद में जल प्रबन्ध एवं कृषि विकास एक भौगोलिक अध्ययन अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, भूगोल विभाग, डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद
7. पण्डेय जे0 एन0, (1995): सरयूपार मैदान में संसाधन उपयोग एवं संरक्षणः एक भौगोलिक अध्ययन" पी–एच0डी0 शोध प्रबन्ध, अप्रकाशित दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
8. त्रिपाठी, अरविन्द,(2018): ग्रामीण विकास में व्यापारिक कृषि की भूमिका : गोंण्डा जिले का एक प्रतीक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध,भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद
9. कुमारी, प्रीति (जून 2015) : मध्य प्रदेश में भूमि प्रतिरूप, संविकास संदेश पत्रिका, अंक–23, नं.–1, पृ0 84–87
10. www.updesh.up.nic.in